International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

समकालीन महिला कथाकारों के साहित्य में स्त्री जीवन के विविध आयाम: स्त्री-विमर्श का एक अध्ययन

डॉ० कृष्णा मीणा

सहायक आचार्य, गार्गी कॉलेज (दिल्ली विश्वविद्यालय), नई दिल्ली, भारत

शोध सारांश

समकालीन साहित्य ने कथाकार के सामने नयी चुनौतियाँ और संभावनाओं की लेखनी चलाने का अवसर प्रदान किया है। स्त्री विमर्श का स्वरूप समकालीन हिन्दी लेखन के माध्यम से सशक्त रूप से व्यक्त हुआ है। समकालीन हिन्दी लेखन के माध्यम से लेखिकाओं ने स्त्री-विमर्श के विविध प्रश्नों को रेखांकित किया। समकालीन लेखिकाओं ने समकालीन साहित्य में स्त्री-विमर्श की सीमा का अतिक्रमण करके संघर्ष के रूप में वैचारिक सम्बल प्रदान किया है। प्रस्तुत रचना में समकालीन हिंदी लेखिकाओं के साहित्य और स्त्री-विमर्श का अंर्तसंबंध का विवेचन किया गया है।

संकेताक्षरः समकालीन साहित्य, स्त्री विमर्श, हिन्दी कथा-लेखिकाओं, अंर्तसंबंध।

मनुष्य का प्रभाव समाज पर पड़ता है और उसी प्रकार समाज भी मनुष्य को प्रभावित करता है। व्यक्ति की चेतना का विकास भी उसी सामाजिक परिवेश के अनुरूप होता है। साहित्यकार/कवि भी समाज का अंग होता है, इसलिए उसका चिंतन किसी न किसी रूप में अपने युग के परिवेश का परिणाम होता है। किसी भी युग के परिवेश को समझने के लिए उस समय के साहित्य पर दृष्टि डालने की आवश्यकता है।

'समकालीन' शब्द देश और दुनिया को चिन्हित करने वाला एक व्यापक पारिभाषिक शब्द है जिसे आज हम जी रहे हैं। समकालीन से अभिप्राय उस समस्त कालखंड से है, मोटे तौर पर 1960 वर्ष से माना जा सकता है, जो हमने जिया है, भोगा है और जिसे जी रहे है। समकालीन साहित्य वर्तमान समय और समाज को उद्घाटित करते हैं। समकालीन साहित्य पुरानी समीक्षाओं के आधार पर विश्लेषित नहीं किया जा सकता। उत्तर आधुनिकता के आधार पर ही समकालीन साहित्य को समझकर वर्तमान समय और समाज को जान सकते हैं। समकालीन हिन्दी साहित्य में विमर्श के केन्द्र में रखते हुए सशक्त लेखन हुआ है।[1]

समकालीन साहित्य एक बृहत् रचनात्मक धरातल तैयार कर युगीन रचनाकारों की लेखनी चलाने का अवसर प्रदान किया है। यह साहित्य जनमानस की अन्तपीड़ा की अभिव्यक्ति है। सामाजिक रूढ़ियों, आडम्बरों एवं जड़वत परम्पराओं

को उखाड़ फेंकने की क्षमता है। समकालीन साहित्य आज के समाज के महत्वपूर्ण मुद्दों-भूमण्डलीकरण, बाजारवाद, सामाजिक भय, आतंक आदि को व्यक्त करता है। समकालीन साहित्य ने परिवर्तन पर मानवीय विकास के अक्षर लिखे हैं। 'विमर्श' का अर्थ है जीवन्त बहस। भारतीय संदर्भ में स्त्री-विमर्श में एक ओर परम्परागत भारतीय नारी की छवि है, दूसरी और आधुनिक स्वच्छन्द या पाश्चात्य नारी की छवि है।[2] पुरूष वर्ग ने सदियों से नारी को देवी, सती, साध्वी, अर्द्धांगिनी, दासी, सेविका, मोहनी, प्रिया इत्यादि अनेक प्रकार से सम्बोधित किया है। आजकल भारतीय समाज में नारी देह एक वस्तु होकर बाजार में खड़ी है। इस दौर में नारी से सबल पुरूष उसे भोग की वस्तु समझकर उसके अस्तित्व को पैरों तले रौंदता रहा है। स्त्री स्वच्छन्दता में आधुनिक संसाधनों, पहनावा, दूरदर्शन, मोबाइल और नेट भी सहायक है। इस चकाचौंध भरी दुनियाँ में नयी कुण्ठाएँ उसके मन में बन जाती है, लेकिन इन सबके बावजूद एक स्त्री गुणों का खान होती है। उसके अन्दर प्रेम, सौन्दर्य, वत्सलता, ममत्व आदि अनेक गुण हैं, जो केवल स्त्री में ही हो सकते हैं।

आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के कारण समाज में परिवर्तन हुए। बदलती सामाजिक परिस्थितियों में भारतीय नारी परिवार और परिवेश में अपनी भूमिका की नये सिरे से व्याख्या कर रही थी। 'नारीवाद' सोच ने स्त्री के लिए समाज के केन्द्र में जगह बनाने की माँग की। महादेवी वर्मा लिखती हैं- 'हमें न किसी पर जय चाहिए न किसी से पराजय न किसी पर प्रभुत्व चाहिए, न किसी पर प्रभुता। केवल अपना स्वत्व चाहिए, जिनका पुरूषों के निकट कोई उपयोग नहीं है, क्योंकि इसके बिना हम समाज का उपयोगी अंग नहीं बन सकेगी।''

स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा था- ''पश्चिम की नारी पहले प्रेयसी है, फिर पत्नी और फिर भी जबकि भारत की नारी पहले भी हैं, फिर पत्नी इसके बाद प्रेयसी । यह एक बुनियादी अन्तर है।'' परन्तु आज भारत की नारी आत्म-चेतना और आत्म-निर्भरता के कारण आत्मविश्वास से लबरेज हो रही है। यह नारियाँ रूढ़िवादी संस्कारों के पीछे आँख बंदकर चलना छोड़ चुकी है । भारत की नारी समाज में अपनी स्वायत्तता स्थापित करना चाहती है, वह अपनी समस्याओं का सामना पूर्ण क्षमता से कर रही है । विवाह संस्थान अब उनके लिए समाज व्यवस्था में समानता का अधिकार है । वह अपने कर्तव्यों को पहचान चुकी है, अब उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता।[3]

हिन्दी साहित्य में स्त्री-विमर्श की परम्परा बहुत पहले से चली आ रही है। आज़ादी के समय से लेकर आज तक स्त्री-विमर्श में अनेक प्रकार साहित्यिक विधाओं-कहानी, उपन्यास, आत्मकथा और कविता के माध्यम से चिंतन किया गया है। इन सभी विधाओं में स्त्री-विमर्श का स्वरूप समकालीन हिन्दी लेखन के माध्यम से सशक्त रूप से व्यक्त हुआ है। समकालीन हिन्दी लेखन के माध्यम से लेखिकाओं ने नारी जीवन के विविध प्रश्नों को रेखांकित किया। अपनी अस्मिता तथा अस्तित्व बोध के प्रति नारी की सजगता 1960 के बाद के समकालीन हिन्दी साहित्य में विकसित होती गई। स्त्री विमर्श की चेतना समकालीन हिन्दी साहित्य में प्रखर होती गई ।

डॉ रामविलास शर्मा के अनुसार- ''समाज के भीतर जो जीर्ण और मरणशीला तत्व है जो जीवन्त और उदायीमान तत्व है, इनसे बाहर सौन्दर्य की सत्ता नहीं है। जो जीर्ण और मरणशील है उनके लिए सुन्दरता मृत्यु में है, अन्याय और अत्याचार के फरेब को ढँकने में हैं। जो जीवित और उदीयमान है, उनके लिए सुन्दरता सत्य में है, मृत्यु को जीतने में है।''[4] समकालीन हिन्दी कथा साहित्य में स्त्रियों की स्थिति पर केन्द्रित रचनाएँ का दौर रहा। हिन्दी कथा-लेखिकाओं द्वारा नारी स्थिति को केन्द्र में रखकर नारी के हर पक्ष का खुलासा किया गया। समकालीन हिन्दी कथा लेखन के विवेचन के क्रम में यह तथ्य खुलकर सामने आता है कि हिन्दी कथा-लेखिकाओं ने परंपरागत मान्यताएँ, रूढ़ियों, अन्याय और अत्याचार के खिलाफ कदम उठाने का साहस किया है। समकालीन साहित्य में लेखिकाओं मन्नू भण्डारी, उषा प्रियंवदा, ममता कालिया, मैत्रेयी पुष्पा ने स्त्री जीवन की पीड़ा और स्त्री मन के बहुत सारे बिन्दुओं को स्थान मिला।[5]

कृष्णा सोबती (ए लड़की), मन्नू भंडारी (यही सच है, शेष फिर, कमरा और कमरे, बंद दरवाजा के साथ), प्रभा खेतान (छिन्नमस्ता), सिम्मी हर्षिता (चक्रभोग, उसका मन, बंजारन की हवा), नासिरा शर्मा (आसिया, शाल्मली), अलका सरावगी (मंहगी किताब, लाल मिट्टी की सड़क, यह भी सहसी है, वह भी सही है), राजी सेठ (सदियों से), मैत्रेयी पुष्पा (फैसला, वसुमती), उषा प्रियंवदा (वापसी), गीतांजलि श्री (अनुगूँज, बेलपत्र), कुसुम अँचल (मैच मेकर), मृदुला गर्ग (पोंगल), सुरभि पाण्डेय (अहल्या), चित्रा मुद्गल (जिनावर), क्षमा शर्मा (लव स्टोरीज 94, घर -घर, कस्वे की लड़की), जया जादवानी (कब्र से बाहर) हिन्दी कथा-लेखिकाओं द्वारा नारी का बहु-आयामी चित्रण प्रस्तुत किया गया।[6]

हिन्दी कथा-लेखिकाओं ने कहानी के समानान्तर उपन्यास में भी स्त्री-विमर्श की पहल दिखाई। कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, उषा प्रियंवदा जैसी वरिष्ठ लेखिकाओं ने 'मित्रो मरजानी', 'सूरजमुखी अंधेरे के', 'दिलोदानिश', 'आपका बंटी', 'रूकोगी नहीं राधिका', 'शेषयात्रा', जैसे उपन्यास लिखे। मृदुला गर्ग का 'कंठ गुलाब' , प्रभा खेतान का 'छिन्नमस्ता', चित्रा मुद्गल का 'आवा', चन्द्रकान्ता का 'कथा सतीसर', मैत्रेयी पुष्पा का 'चाक', 'विजन', अलका सरावगी का 'शेष कादम्बरी', सुनीता अग्रवाल की 'उस पार की जोगिन' आदि स्त्री को केन्द्र में रखकर उपन्यास रचना के क्षेत्र में उतर आई। समकालीन हिन्दी कथा साहित्य को चित्रा मुद्गल ने 'गेंद', 'भूख', तथा 'जिनावर' कहानियाँ के माध्यम से उकेरा। उनकी 'वाइफ स्वैपी' जैसी कहानी में स्त्री की खुलेपन और उसका कमोडिटी की तरह इस्तेमाल प्रस्तुत किया गया। स्त्री की अस्मिता को उनकी 'दुल्हिन', 'ट्रेन छूटने तक', 'लिफाफा', 'दरमियान', 'एंटीक पीस', 'जब तक विमलाएँ हैं', 'अढ़ाई गज की ओढ़नी', 'तकिया' कहानियों में प्रतिमान स्थापित किए। उनका 'आवा' उपन्यास नारी चेतना का परिचायक है। कृष्णा सोबती की 'मित्रो मरजानी' में स्त्री की दैहिक आवश्यकताओं को केन्द्र में रखकर क्लासिक रचना प्रस्तुत की गई। उनकी 'ए लड़की', 'सिक्का बदल गया,' 'यारों के यार', 'नामपट्टिका', 'तिनपहाड़, जैसी कहानियों तथा 'जिन्दगीनामा', 'डार से बिछुड़ी', ' दिलोदानिश', जैसे उपन्यासों में स्त्री चित्रण प्रस्तुत किया गया। 'ए लड़की' कहानी में माँ की अपनी बेटी को जीने की सलाह तथा 'दिलोदानिश', पितृसत्तात्मक समाज स्त्री की सामाजिक हैसियत का खुलासा है।

मन्नू भंडारी का हिन्दी के महिला कथा लेखन में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। 'यही सच है','अकेली', और 'त्रिशंकु' जैसी संवेदनशील कहानियाँ तथा 'एक कमजोर लड़की की कहानी' और 'हार' जैसी कहानियाँ मानसिक व भौतिक स्वतंत्रता की आकांक्षा को प्रस्तुत करती हैं। 'आपका बंटी' कहानी में आज की नारी की पीड़ा को छुआ है। समकालीन हिन्दी कथा साहित्य की कथाकार उषा प्रियंवदा ने अपनी कहानियों में नारी जीवन की त्रासद स्थितियों को प्रस्तुत किया। 'मछलियाँ', 'मोहबंध', 'एक कोई दूसरा' और 'सागर पार संगी' कहानियों में स्त्री-पुरूष संबंधों को उठाया गया है। 'रूकोगी नहीं राधिका' कहानी एकांतवास के टूटने की कथा है। 'पचपन खम्भे लाल दीवारें' कहानी नारी-जीवन की त्रासद स्थितियों का खुलासा है। 'शेष यात्रा' उपन्यास में नारी जीवन की त्रासदी को प्रस्तुत किया है।[7]

हिन्दी कथा कथाकार प्रभा खेतान ने अपनी कहानियों - 'छिन्नमस्ता', 'अपने -अपने चेहरे', 'स्त्री पक्ष', 'पीली आँधी' में स्त्रियों के बनते-बिगड़ते रिश्तों को उठाया है। 'आओ पे पे घर चलें' हिन्दी का पहला उपन्यास है जो वैश्विक स्तर पर नारी जीवन की पीड़ा को अंकित करता है।[8] ममता कालिया की कहानी 'बोलने वाली औरत', उर्मिला पवार की 'औरत जात' तथा मृदुला गर्ग की 'तीन किलो की छोरी', 'उसके हिस्से की धूप' और 'चितकोबरा' स्त्री की पारम्परिक छवि को तोड़ने का खुलासा है।

ज्योत्सना मिलन की कहानी 'बा' में नारी जीवन की मार्मिक अभिव्यक्ति है। सूर्यबाला की 'सुमिंतरा की बेटियों' कहानी नारी उत्पीड़न को को अंकित करती है। मैत्रेयी पुष्पा ने 'पगला गई है भागो' और 'चाक' में सामाजिक व्यवस्था की विसंगतियों पर चोट की है। अल्पना मिश्र की 'मुक्ति प्रसंग', 'तलाश', 'बेदखल', 'जिम्मी के सपने', 'लिफ्ट से गायब', 'इस जहाँ में हम', 'छावनी में बेघर' आदि कहानियाँ नारी जीवन और सामाजिक रिश्तों को उठाया है। नासिरा शर्मा की कहानी 'मेरा घर कहाँ', मृणाल पाण्डेय की 'कोठरी की लड़की', राजी सेठ की 'स्त्री', मेहरून्निसा परवेज की 'साल की पहली रात', रश्मितन्वा की 'पार्टी', मृदुला गर्ग के 'कठगुलाब', मंजुल भगत की 'अनारो' आदि कहानियाँ स्त्री-विमर्श का निर्माण करती है।

मुक्ता के कहानी संग्रह 'सीढ़ियों का बाजार' में संकलित तीन कहानियाँ 'आँच', 'मंडलावाली' और 'उस शहर का नाम' स्त्री-विमर्श की एक छवि है। शीला रोहेकर के उपन्यास 'तावीज' में चाकू की धार पर चलने को मजबूर स्त्री तथा सुनीता अग्रवाल की 'उस पार की जोगिन' में स्त्री-जीवन के संघर्ष को रूपायित किया गया है। चन्द्रकान्ता के 'कथा सतीसर' उपन्यास पर स्त्री-विमर्श का ही प्रभाव है। समकालीन व्यंग्य-लेखन में लता शर्मा का पहला व्यंग्य-संग्रह 'खट्ट .....खारी.... कुरकुरे' की पहली रचना 'शिक्षित या साक्षर' से स्त्री-विमर्श पर ही केन्द्रित है। समकालीन लेखनी में नारी सौन्दर्य और वासना के रंग भी दिखाई पड़ते है।

समकालीन साहित्य ने अपने अनेक आयामों में स्त्री-विमर्श को चिंता का विषय बनाया है, और समाज को सचेष्ट करने का भरसक प्रयत्न किया है। समकालीन साहित्य में स्त्री विमर्श लेखन नई सदी की अभिव्यक्ति का एक महत्वपूर्ण बिन्दु है। नारी पर लिखते हुए नारी की दुर्दशा का यथार्थ चित्रण किया है। वर्तमान में नारी-विमर्श की जडें फैलती जा रही हैं, नारी-जीवन के विभिन्न परिप्रेक्ष्यों को समकालीन कथा लेखन में न केवल परिमाणात्मक बल्कि एक गुणात्मक परिवर्तन के रूप में भी परिलक्षित किया जा सकता है।[9]

समकालीन साहित्य नारी के सम्पूर्ण जीवन की विसंगतियों, असमानताओं एवं विद्रूपताओं को रेखांकित ही नहीं करता उसके व्यक्तित्व के जीवन मूल्यों की विवेचना करते हुए नारी समाज को प्रोत्साहित भी करता है। वह आज की नारी के मध्य एक सामन्जस्य बनाये रखने का सेतु है। वह भारतीय नारी के मानक मूल्यों- प्रेम, समर्पण, सहनशीलता, कर्तव्यनिष्ठा, करूणा, सेवा और त्याग की भावना को स्वीकार करता है और नारी अस्तित्व के लिए चिंतित भी है। समकालीन साहित्य में सभी लेखन स्त्री-विमर्श की सीमा का अतिक्रमण करके संघर्ष के रूप में उभर रहा है। आज नारी सबला होने के लिए संघर्षरत है, समकालीन रचनाकारों ने वैचारिक सम्बल प्रदान किया है।

संक्षेप में स्त्री-विमर्श में यही कहा जा सकता है कि समकालीन रचनाओं में हिन्दी कथा-लेखिकाओं ने नारी के विविध रूपों एवं आकारों पर लेखनी चलाई गई है। उनमें शिक्षित, अशिक्षित, गृहस्थ-बाजारू, रोजगार-बेरोजगार तथा ग्रामीण एवं शहरी नारी की विसंगतियों की स्थापनाओं को अपनी लेखनी की विषय बनाया है।

संदर्भ:

1. जायसवाल, नीतू (2014): समकालीन हिन्दी उपन्यासों में नारी विमर्श- स्वरूप एवं दृष्टि, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ http://hdl.handle.net/10603/314949
2. सिंह, ममता (2006): समकालीन महिला लेखन का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ http://hdl.handle.net/10603/317439
3. राय, बिजेंद्र कुमार (2004): समकालीन महिला उपन्यासकारों की सामाजिक चेतना, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ http://hdl.handle.net/10603/317825
4. शर्मा, रामविलास (1959): लोकजीवन और साहित्य, विनोद पुस्तक मन्दिर, हॉस्पिटल रोड, आगरा, पृ 95
5. सेठ, नीलिमा (2005): समकालीन हिंदी कहानी में स्त्री विमर्श, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ http://hdl.handle.net/10603/317863
6. सोनकर, श्याम जी (2009): वर्तमान हिंदी महिला कथा लेखन और स्त्री विमर्श 1990 से 2000, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ http://hdl.handle.net/10603/318758

7. शर्मा, मेघा (2020): उषा प्रियंबदा एवं मन्नू भंडारी के कथा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन, जीवाजी विश्वविद्यालय http://hdl.handle.net/10603/334755
8. दुबे, कविता (2010): प्रभा खेतान के उपन्यासों में स्त्री विमर्श, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ http://hdl.handle.net/10603/318663
9. त्रिपाठी, रितु (2007): समकालीन स्त्री लेखन में स्त्री अस्मिता की तलाश, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ http://hdl.handle.net/10603/317861